बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 105/2024) Year: 6th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 30/04/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ ग्रीष्म कालीन पीछेती उत्पाद हेतु कुल्फा, चौलाई, लोबिया, भिंडी, लौकी, करेला, कद्दू, तरोई, खीरा, ककड़ी, की बुआई करें। ➢ बैगन, शिमला मिर्च/मिर्च, भिंडी व कद्दू वर्गीय सब्जियों की फसलों में पलवार प्रयोग करें। ➢ फसलों में फल छेदक, तना छेदक, माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंसा अनुसार प्रबंधन करें। ➢ खड़ी फसलों में समुचित जल एवं खर पतवार प्रबंधन करें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	➢ रबी फसल के उपज को अच्छी तरह साफ कर धूप में सुखाकर 12 प्रतिशत से कम नमी की दशा में भंडारित करना चाहिये। ➢ इस समय के तापमान को ध्यान में रखते हुये सभी फसलों में हल्की सिंचाई अवश्य करें। सिंचाई हमेशा शाम या सुबह के समय करना चाहिये। ➢ हरी खाद हेतु मूँग, सनई, ढ़ैचा की बुआई प्रथम सप्ताह में अवश्य पूर्ण करें। ➢ खाली खेत में ग्रीष्मकालीन जुताई अवश्य करें। ➢ मिट्टी परीक्षण हेतु नमूने एकत्र करें तथा परीक्षण हेतु जिला कृषि कार्यालय से सम्पर्क करें। ➢ आवश्यक होने पर मृदा समतलीकरण अवश्य कर लें। ➢ कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि खेत में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अवश्य करें। ➢ गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दे ताकि कीट के अंडे–बच्चे रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हों जायें।
3-	पशुपालन प्रबंधन	इस माह में तापमान काफी बढ़ जाता है तथा मैदानी क्षेत्रों में धूलभरी ऑधियॉ व लू (गर्म हवा) इंसानों को ही नहीं अपितु पशु पक्षियों को भी प्रभावित करती है। इस कारण गर्मी से होने वाली बीमारियाँ पालतू पशुओं को भी प्रभावित करती है। गर्म मौसम में पशुओं की आहार ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती

		है। जिस कारण दुधारू पशुओं का उत्पादन भी कम हो जाता है इसके निदान के लिए ... ➢ पशुओं को भोजन पानी में भिगोकर देना चाहिए एवं हरे चारे की मात्रा बढ़ानी चाहिए जिससे पशुओं द्वारा भोजन की ग्राहयता बढ़ेगी। ➢ दुधारू पशुओं, नवजात व छोटे जानवरों एवं संकर नस्ल की गायों को दिन के समय में धूप में जाने व बॉधने से बचाना चाहिए तथा उनके बॉधने के स्थान में भी गर्म हवा (लू) से बचाव की व्यवस्था करनी चाहिए। ➢ गर्म मौसम में पशुओं के शरीर में लवणों की कमी हो जाती है जिससे बचाव के लिए खनिज लवण उपयुक्त मात्रा में भोजन के साथ मिलाकर देना चाहिए। ➢ साथ ही साथ भोजन में सभी अवयवों का सही एवं उपयुक्त मिश्रण होना चाहिए जिससे दुधारू पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता इस विपरीत मौसम में भी प्रभावित नहीं होगी।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ मूँग/उर्द में बालदार गिडार के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए अथवा एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। ➢ आम में मिली बग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 1 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए अथवा क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ सब्जियों की फसलों में माईट की निगरानी करते रहें व आवश्यकता

		पड़ने पर घुलनशील गंधक का 3 ग्राम/लीटर अथवा स्पाइरोमेसिफेन 0.8 मिली/ली की दर से छिड़काव करें। ➢ फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को 24 – 48 घंटा तक शोधित कर लगाने से लगभग 500 मी0 तक की फल मक्खी आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ भिण्डी के पीतषिरा (मोजैक) व पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के लक्षण दिखायी देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड के 17.8 प्रतिषत एस0एल0 का 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी में घोलबनाकर 15 दिन अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर जमीन को खुला छोड़ दें, ताकि सूर्य की तेज धूप से मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, रोग जनक कवक के बीजाणु खरपतवार के बीज इत्यादि नष्ट हो जायें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ इस माह मे गर्मी होने की वजह से काफी सावधानियां अपनानी चाहिये। सिंचाई 15 दिन के अन्तराल पर अवष्य दें। बूंद–बूंद सिंचाई सबसे अधिक लाभकारी विधि है। ➢ भूमि के जल को मलचिंग द्वारा संरक्षित किया जा सकता है जिसमें पॉलीथीन शीट, सूखी धास फूस, चने का भूसा इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है। ➢ नये बाग लगाने के लिए गढ्ढे अभी खोद दें ताकि धूप से कीड़ो तथा बीमारियों का नियंत्रण हो सके । माह के अन्त में इन गढ़ढों में आधा उपर वाली मिट्टी तथा आधी कम्पोस्ट में क्लोरपाइरीफास दवाई मिलाकर पूरी तरह से उपर तक भर दें । ➢ आम के पेड़ों की देखभाल अच्छी तरह से करते रहें तथा जड़ों में समय –समय पर पानी देते रहें ताकी पानी के अभाव में फल मुरझाकर नीचे न गिरने लगे। ➢ आम में मई माह में फूलों की जगह पत्तों के गुच्छे बन जाते हैं इन्हें तोड दें । इस समस्या से निदान पाने के लिये एन0 ए0 ए0 का 2०० पी पी एम घोल का छिडकाव करें । ➢ नीबू प्रजाति के पोधों में फल गिरने की शिकायत मिलती है, इसे २–४ डी (१० पी पी एम) या ०.७ प्रतिशत जिंक सल्फेट या आरोफुगिन (२० पी पी एम) के घोल का स्प्रे करने पर रोका जा सकता है। ➢ इस माह में केला और पपीता के फलों को पत्तियों व बोरियों से ढक कर तेज धूप से बचाया जाता है।

		➢ बेर में कटाई छंटाई के लिए मई का महीना उपयुक्त होता है, जब पौधों की अधिकांश पत्तियां झड़ चुकी होती हैं तथा पेड़ सुषुप्तावस्था में हो, सबसे उपयुक्त माना जाता है । रोगों के प्रकोप से बचाव के लिए शाखाओं के कटे हुए स्थानों पर फफूंदनाशी (नीला थोथा या ब्लाइटाक्स– 50) का लेप कर देना चाहिए । ➢ गर्मियों में आमतौर पर वातावरण निरंतर शुष्क होता जाता है, जिससे मृदा में पानी की कमी होने लगती है । अमरूद में उचित समय पर सिंचाई नहीं होने पर फलों की वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है, जिसके परिणामतः फल छोटे रह सकते है, इसलिए 8 से 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई कर दी जानी चाहिए। फलमक्खी नियंत्रण के लिए 1.5 मि.ली प्रोफेनोफास प्रति लीटर पानी में मिलाकर फल परिपक्कता के पूर्व 10 दिनों के अंतर पर 2–3 छिड़काव करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ कृषि वानिकी प्रणाली के तहत लगाए गए दो–पांच साल के पेड़ों को पलवार करना (घास–पात से ढकना) की सलाह दी जाती है। ➢ चारे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, किसान खेत की सीमा के किनारे वृक्षारोपण की योजना बना सकते हैं।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ दिनेश गुप्ता
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
5. डॉ राकेश पाण्डेय	